आदिकारण हैं और इसी भावना से भावित होकर कर्म करता है, वह सबका कल्याण-कार्य करता है। मानवता के दुःखों का कारण यह भूल जाना है कि श्रीकृष्ण परम भोक्ता, परम ईश्वर और सबके परम सुहृद हैं। अतः पूरे मानवीय समाज में इस भावना के पुनर्जागरण के लिए कर्म करना परमोच्च कल्याणकार्य है। एक मुक्तपुरुष ही उत्तम कल्याण-कार्य कर सकता है। कृष्णभावनाभवित पुरुष को श्रीकृष्ण की परात्परता में लेशमात्र संशय नहीं रहता। पूर्ण पापमुक्त हो जाने के कारण उसमें संशय का अभाव हो जाता है। यह दिव्य भगवत्प्रेम की अवस्था है।

जो व्यक्ति मानव समाज का भौतिक कल्याण करने में ही लगा हुआ है, वह यथार्थ में किसी की भी सहायता नहीं करता। देह और चित्त को दिया गया क्षणिक सुख सन्तोषकारी नहीं कहा जा सकता। जीवन-संघर्ष में आने वाली भीषण कठिनाइयों का यथार्थ कारण तो जीव का श्रीभगवान् से अपने सम्बन्ध को भूल जाना ही है। जिस मनुष्य को श्रीकृष्ण से अपने सम्बन्ध का बोध हो जाता है वह संसार रूपी सराय में रहता हुआ भी वास्तव में जीवन्मुक्त है।

24/5

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्।।२६।।

काम=काम; **क्रोध**=क्रोध से; **वियुक्तानाम्**=जो मुक्त हैं; **यतीनाम्**=सन्तों के लिए; **यतचेतसाम्**=जीते हुए चित्त वाले; **अभितः**=सब ओर से; **ब्रह्म निर्वाणम्**=मुक्ति; **वर्तते**=प्राप्त है; **विदितात्मनाम्**=जो आत्मतत्त्व के ज्ञाता हैं।

अनुवाद

जो काम-क्रोध से मुक्त हैं, आत्मस्वरूप को जानते हैं, आत्मसंयमी हैं और संसिद्धि के लिए प्रयत्नशील हैं, उन्हें सब ओर से परमगति प्राप्त है।।२६।।

तात्पर्य

मुक्ति के लिए निरन्तर साधन-परायण सब प्रकार के सन्तों में कृष्णभावनाभावित पुरुष सर्वश्रेष्ठ है। श्रीमद्भागवत (४.२२.३९) में इस तथ्य की पुष्टि इस प्रकार प्रकार है—

यत्पादपंकजपलाशविलासभक्त्या
कर्माशयं ग्रथितमुद्ग्रथयन्ति सन्तः।
तद्वन्नरिक्तमतयो यतयोऽपि रुद्ध-
स्रोतोगणास्तमरणं भज वासुदेवम्।।

''जो सकाम कर्मों की सुदृढ़ कामना को निर्मूल करके भगवच्चरणारविन्द के सेवामृत से प्राप्त होने वाले चिन्मय आनन्द में विभोर हैं, उन भक्तों के समान तो महर्षिजन भी इन्द्रियवेगों को रोक नहीं पाते। इसलिए सबको भक्तिभाव से भगवान् वासुदेव का ही भजन करना चाहिए।''

मायाबद्ध जीव में सकाम कर्म की इच्छा इतनी दृढ़ है कि भगीरथ-प्रयत्न करने